योग विज्ञान विभाग

विवरणिका

2022-2023

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः

दिल्ली-राष्ट्रिय-राजमार्गः
पत्रालयः बहादराबादः, हरिद्वारम्-249402
E-mail : registrar@usvv.ac.in, Website : www.usvv.ac.in

श्रीमन्तो ले. जनरल (से.नि.) गुरमीतसिंहमहोदयाः
माननीयाः कुलाधिपतयः उत्तराखण्डप्रदेशस्य राज्यपालाश्च

श्रीपुष्करसिंहधामी
मा0 मुख्यमंत्री

डॉ. धनसिंहरावतः
मा. संस्कृतशिक्षामन्त्री

प्रो.देवीप्रसादत्रिपाठी
कुलपतिः

लखेन्द्रगौथियालः
वित्तनियन्त्रकः

श्रीगिरीशकुमारः अवस्थी
कुलसचिवः

योग विज्ञान विभाग

विवरणिका

सत्रम् 2022–23

सम्पादक

डॉ0 कामाख्या कुमार

विभागाध्यक्ष, योग विज्ञान विभाग

सह-सम्पादक

डॉ0 लक्ष्मीनारायण जोशी

सहायक आचार्य, योग विज्ञान विभाग

प्रकाशकः

कुलसचिवः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

हरिद्वार-दिल्लीराष्ट्रियराजमार्गः,

पत्रालयः- बहादराबादम्, हरिद्वारम्

पिनसंख्या-249402

जालपुटम् www.usvv.ac.in

मूल्यम् : 600 रूप्यकाणि

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

कुलगीतम्

यथादेवभूम्युद्भवा दिव्यगंगा,
सुधाधारया लोकमेतं पृणाति।
तथा मोदयन् विद्यया विश्वमेतत्,
सदा विश्वविद्यालयोऽयं विभाति।।1

ऋषीणां मुनीनां सुराणां कवीनां,
सतां साधनाद्यैः पवित्रात्मनां च।
सुरक्षन्नमूल्यं निधिं धीधनानां,
सदा विश्वविद्यालयोऽयं विभाति।।2

स्वदेशीयभाषासुवेषाद्युपेतं,
निजं संस्कृतं संस्कृतिं सेवमानः।
स्वसत्कर्मभिः सर्वकल्याणकारी,
सदा विश्वविद्यालयोऽयं विभाति।।3

कलाज्ञानविज्ञानविद्याविभूति-
प्रवाहप्रतानैकनिष्ठो वरिष्ठः।
समारूढसन्मार्ग-शिष्टानुयायी,
सदा विश्वविद्यालयोऽयं विभाति।।4

सदा भावयन् विश्वबन्धुत्वभावं
किरन्नद्वयस्नेहसिक्तस्वभावम्।
प्रणाश्य प्रजादुःखदारिद्र्यदावं,
सदा विश्वविद्यालयोऽयं विभाति।।5

दृढं खण्डयन् चण्डपाखण्डभाण्डं
समुद्घाटयन् शाश्वतं सत्यतत्त्वम्।
स्वभानाभया भासयन् भव्यभानुः,
सदा विश्वविद्यालयोऽयं विभाति।।6

यशोवीरतापौरुषाद्यर्थमत्र
प्रजाः प्रेरयन् दुर्गुणानां कृशानुः।
हृदा भारतीयत्त्वसम्पादकश्च,
सदा विश्वविद्यालयोऽयं विभाति।।7

मदद्वेषरागादिरूपान्धकारे,
नवीनां दिशां दर्शयन्नात्मदृष्ट्या।
सुरम्योत्तराखण्डमायापुरीस्थः,
सदा विश्वविद्यालयोऽयं विभाति।।8

क्रम संख्या-56

पंजीकृत संख्या-यू०ए०/बी०एन०-30/03
(लाईसन्स टू पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट)

सरकारी गजट, उत्तरांचल

उत्तरांचल सरकार द्वारा प्रकाशित

असाधारण

विधायी परिशिष्ट
भाग-1, खण्ड (क)
(उत्तरांचल अधिनियम)

देहरादून, बृहस्पतिवार, 21 अप्रैल, 2005 ई०
बैशाख 01, 1027 शक सम्वत्

उत्तरांचल शासन

विधायी एवं संसदीय कार्य विभाग

संख्या 486/ विधायी एवं ससदीय कार्य/2005

देहरादून, 21 अप्रैल, 2005

अधिसूचना

विविध

"भारत का संविधान" के अनुच्छेद 200 के अधीन राज्यपाल महोदय ने उत्तरांचल विधान सभा द्वारा पारित उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (तृतीय संशोधन) विधेयक, 2005 पर श्री राज्यपाल ने दिनांक 20-04-2005 को अनुमति प्रदान की और वह उत्तराचंल अधिनियम संख्या 17, सन् 2005 के रुप में सर्वसाधारण के सूचनार्थ इस अधिसूचना द्वारा प्रकाशित किया जाता है।

उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (तृतीय संशोधन) अधिनियम, 2005

(अधिनियम सं० 17, वर्ष 2005)

उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) में अग्रेत्तर संशोधन करने के लिए

अधिनियम

भारत गणराज्य के छप्पनवें वर्ष में उत्तरांचल विधान सभा द्वारा निम्नलिखित रुप में यह अधिनियमित हो:-

1-(1) यह अधिनियम उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम,.....संक्षिप्त नाम
1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (तृतीय संशोधन) अधिनियम, 2005.....एवं प्रधान कहा जायेगा।

(2) यह उस तारीख.....

मूल अधिनियम — 2– उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, या संशोधन 1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001), जिसे यहां मूल अधिनियम कहा गया है, में जहां–जहां "सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय" शब्द आते है, वहां उन शब्दों के स्थान पर "उत्तरांचल संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार" शब्द रखे जायेंगे।

आज्ञा से,
आई० जे० मल्होत्रा,
प्रमुख सचिव

No, 488/Vidhayee & Sansadiya karya/2005
Dated Dehradun, april 21,2005
NOTIFICATION
Mlacellaneous

In pursuance of the provision of clause (3) of Article 348 of the India the Governor is pleased to order the publication of the following English of The Uttaranchal (The Utter Pradesh State University Act, 1973)(Adaptation and Modification Order, 2001)(third Amendment)Bill, 2005 (Uttaranchal Adhinlyam Sankhya 17 of 2005).

As passed by the Uttaranchal Legislative and assented and assented to by the Governor on 20-04-2005.

THE UTTRANCHAL (THE UTTER PRADESH STATE UNIVERCITY ACT, 1073)(ADAPTATION AND MODIFICATION ORDER, 2001)(THIRD AMENDMENT)

ACT,2005
(Act no. 17 of 2005)

Further to amend the Uttaranchal (The Utter Pradesh State University Act, 1973) (Adaptation and Modification Order, 2001)

AN
ACT

Be it enacted by the state Assembly of Uttaranchal in the Fifty-sixth year of the Republic of India as follows:-

Short UUe & Commencement — **1- (1)This Act may be the called The Uttaranchal (The Utter Pradesh State University Act, 1973)(Adaptation and Modification Order, 2001)(third Amendment)Bill, 2005 (Uttaranchal Adhinlyam Sankhya 17 of 2005).**

2- It shall come into force on such date as the State date as the State Government may , b notification in the official Gazette appoint.

Amendment — **2- In The Uttaranchal (The Utter Commencement Pradesh State University Act, 1973)(Adaptation and Modification Order, 2001), herein after referred to as principal Ac Wherever the expression "Sampurnanand Sanskrit University" occurs, the word Uttaranchal Sanskrit University, Haridwar shall be substituted.**

By. Order,
I.J. MALHORA
Principal Secretor

पी०एस०यू० (आर०ई०)18 विधायी / 158–2006–83+300 (कम्प्यूटर / कीजियी)।

No.F. 9-6/2006 (cpp-1) **Notification**

A new University named as Uttrakhand Sanskrit University, Haridwar has been established by Acct No. 486/ Vidhi and Sansadiya karya 2005. Dehradun. Dated 21-4-2005 of State Government of Uttrakhand and notification through the State Gazette vide Notification on No 727/11-2005-13(05)/03 dated 24th October,2005. The said university has been includes in the list of universities maintained by the University Grants Commission. Section-2(1)of the UGC Act. 1965.

However, the above University , shall not be eligible to receive any assistance from University Grants Commission and any other source funded by the Government of the includes the University is declared fit to receive central assistance under Section 12 (B) of UGC Act.1956.

(C.K)
Deputy Secretary

Copy to:-

1- The Vice-Chancellor, Higher Education Sanskrit University, Haridwar-249401 (Uttrakhand)
2- The Secretary, Government of India Ministry of Human Resouree Development (Department of Secondary & Higher Education), Shastri Bhavan. New Delhi-110001.
3- The Secretary Higher Education, Higher Education Dehradun.
4- The Secretary General, Assessment of India University, 16 kotla marg New Delhi- 110002.
5- Director. (NASS) National Assessment and Accreditation Council (NASS)Banglaore-560010
6- The Director Medical Council of India, kotla Road New Delhi- 110002.
7- The Secretary Union public Service Commission, Shahajahan Road New Delhi- 110001.
8- The Joint Secretary. (SU) UGC, New Delhi.
9- Senior Statiaticul Officer, UGC, 35 Ferozshah Road New Delhi- 110001.
10- Publication Officer. (Web-site), UGC , New Delhi.
11- Section Officer (Mecting Section), UGC , New Delhi.
12- All Regional Officer, UGC. New Delhi.
13- All Section of the UGC, New Delhi.
14- D.P.T. Cell, UGC, New Delhi.
15- Guard file.
16- F. 9-4/2004 (CPP-I).

(Mrs. Urmil Galatl)
Under Secretary

पुरोवाक्

अस्मादेव देवभूभागाद् यथा निर्गता निरुपमपरमपूतपुण्यपया भगवती भागीरथी निखिलमपि चराचरमधिवसुधं सुधाधारया कृतार्थयति, तथैव परमकारुणिकाप्रतिमप्रतिभदिव्यदृगधिगतयाथातथ्यपरमोदारहृदयास्मदृषिमुनिप्रभृतिपूर्वजैः सकलवास्तवसौख्यसमीहया महीयोभिस्तपोभिः प्रत्यक्षीकृताया अनुपमविविधानवद्यविद्या–सुधाया अविच्छिन्नधारया निखिलमपि जगदाप्लावयितुं ज्ञानगङ्गापि इतः प्रवहेदिति धिया विश्वाशेषसंस्कृतिप्राणभूतायाः प्राचीनतमायाः सर्गस्य प्रथमायाः भारतीयसंस्कृतेः तदाश्रयभूतसंस्कृतस्य संस्कृतवाङ्मयप्रतिपाद्यप्राच्यार्वाच्याखिलविद्याकलाज्ञानविज्ञानादेश्च संरक्षण– संवर्धन– प्रोत्साहन––प्रचारप्रसाराद्यर्थं भारतसर्वकारीयसंस्कृतायोगस्य (1956–57 ईसवीयवर्षस्य) अनुशंसानुसारेण उत्तराखण्डसर्वकारद्वारा पञ्चाधिकद्विसहस्रतमख्रैस्टाब्दस्य अप्रैलमासस्य एकविंशे (21–04–2005) दिनाङ्के विश्वविद्यालयोऽयं संस्थापितः। तस्मात् स्वस्थापनासमयादेव ससमर्पणं संस्कृतं संस्कृतिं च सेवमान एष विश्वविद्यालयो विभिन्नेषु संस्कृतसंस्थानेषु शिरोमुकुटमणिरिव राराज्यमानः सन्नुत्तरोत्तरं स्वसमीहितं (स्वलक्ष्यं) साधयन् समेधमानो दरीदृश्यते। अत्र प्राचीनार्वाचीनविभिन्नविषयेषु शास्त्रि–आचार्य–उपाधि (डिप्लोमा)–विशिष्टाचार्य–विद्यावारिधिप्रभृतयः विभिन्नाः पाठ्यक्रमाः संचाल्यन्तेऽधुना। अन्येष्वपि विभिन्नविषयेषु विभिन्नपाठ्यक्रमाः प्रस्ताविता विद्यन्ते। भागीरथीपावनपुलिने रमणीयोद्यानपरिसरादिविभूषितेऽस्मिन् विश्वविद्यालये यथाकालं यथापेक्षं च छात्रहितादिप्रमुखा अन्येऽपि नैकविधाः कार्यक्रमा अनुष्ठीयन्ते, यैः छात्राणां समग्रविकासो भवेदिति। विश्वविद्यालयस्य तत्संचालितपाठ्यक्रमादीनां च संक्षिप्तं विवरणं भवतां जिज्ञासूनां बोधसौकर्याय एतद्विवरणिकामाध्यमेन प्रस्तूयते। अनेन प्रविष्टानां प्रविविक्षूणां च विद्यार्थिनां महान् लाभः सेत्स्यतीति मदीयो द्रढीयान् विश्वासो वर्तते। अतो विश्वविद्यालयेऽस्मिन् प्रवहन्त्यां ज्ञानगङ्गायां गहनावगाहनाय प्रवेशमीप्सूनां स्वागतं व्याहरन्, विश्वविद्यालयीयोद्देश्यसम्पूर्तये समर्पितेभ्यः समस्तेभ्यः अध्यापकेभ्यः अधिकारिभ्यः कर्मचारिभ्यश्च धन्यवादान् वितन्वन् समेषां मञ्जुमङ्गलं कामयमानश्चेहैव निजवाग्व्यापारमुपरमयामि।

प्रो. देवीप्रसादत्रिपाठी
कुलपतिः
उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः
हरिद्वारम्।

पुरोवाक्

जैसे इस देवभूमि से निकल कर अनुपम परमपवित्र एवं पुण्यसलिला भगवती गंगा इस धरती पर समस्त चराचर को अपनी सुधाधारा से उपकृत करती है उसी प्रकार परमकारुणिक, अद्वितीय प्रतिभा व दिव्यदृष्टि सम्पन्न, अधिगतयाथातथ्य, परमोदारहृदय ऋषिमुनि आदि जो हमारे पूर्वज हैं, उनके द्वारा वास्तविक समस्त सुख प्राप्त कराने की इच्छा से महत्तम तपों के माध्यम से प्रत्यक्षीकृत अनेक प्रकार की प्रशस्त विद्यारूप सुधा की अविच्छिन्न धारा से समस्त जगत् को आप्लावित करने के लिये ज्ञानगंगा भी यहीं से प्रवाहित हो इसके लिये, तथा विश्व की समस्त संस्कृतियों की प्राणभूत प्राचीनतम, सृष्टि की पहली संस्कृति (भारतीय संस्कृति), संस्कृत एवं संस्कृत वाङ्मय प्रतिपाद्य प्राचीन–नवीन समस्त विद्या, कला, ज्ञान, विज्ञान आदि के संरक्षण, संवर्धन प्रोत्साहन प्रचार–प्रसारादि के लिये भारत सरकार के संस्कृत आयोग की अनुशंसा के अनुरूप उत्तराखण्ड सरकार द्वारा 21 अप्रैल, 2005 को इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। अपने स्थापना काल से ही पूर्ण समर्पण के साथ संस्कृत एवं संस्कृति की सेवा करता हुआ यह विश्वविद्यालय विभिन्न संस्कृत संस्थानों में शिरोमुकुटमणि की तरह चमकता हुआ उत्तरोत्तर अपने लक्ष्य को सिद्ध करता हुआ आगे बढ़ता दिख रहा है। प्राचीन एवं अर्वाचीन विभिन्न विषयों में शास्त्री (बी.ए.) आचार्य (एम.ए.) उपाधि (डिप्लोमा) विशिष्टाचार्य (एम.फिल्.) विद्यावारिधि (पीएच.डी.) आदि विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। अन्य विभिन्न विषयों में भी पाठ्यक्रम प्रस्तावित हैं। भागीरथी के पावन तट पर विराजमान रमणीय उद्यान परिसर आदि से विभूषित इस विश्वविद्यालय में यथाकाल अपेक्षानुसार छात्रहित में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिनसे छात्रों का समग्र विकास हो सके। विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रम आदि का संक्षिप्त विवरण आप जिज्ञासुओं के बोधसौकर्य हेतु इस विवरणिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे प्रविष्ट एवं प्रथमवार प्रवेश लेने के इच्छुक विद्यार्थियों का महान् लाभ होगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इसलिए इस विश्वविद्यालय में प्रवाहित हो रही ज्ञानगंगा में गहन अवगाहन हेतु प्रवेश पाने के इच्छुक छात्रों का स्वागत करता हूँ। विश्वविद्यालय की उद्देश्य की सम्पूर्ति में समर्पित समस्त अध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सबकी मंजुमंगल की कामना करता हुआ वाणी को विराम देता हूँ।

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
कुलपति
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

विश्वविद्यालयपरिचयः

सुविदितमेवास्ति सरस्वतीसमाराधनतत्पराणां धीमतां यद् विविधभाषाविभूषितोऽयं भारतदेशः विश्वस्मिन् मुकुटमणिरिव राराजते। भारतीया संस्कृतिरपि सर्वश्रेष्ठेति सुप्रसिद्धमेव धरणीतलेऽस्मिन्। भारतभूमिरियं मोक्षदायिनी, तोषदायिनी, सर्वकामप्रसविनी च वर्तते। अस्यां भुवि एव मन्त्रद्रष्टारः ऋषयो महर्षयो बभूवुः। महर्षिवाल्मीकिना संस्कृतभाषायां विरचितमादिकाव्यं रामायणं को न जानाति? अस्याः मातृभूमेः गौरवं महत्त्वञ्च वेदेषु, पुराणेषु, महाकाव्येषु, नाटकेषु च सर्वत्र प्रतिपादितमस्ति।

विश्ववारा सा भारतीयैव संस्कृतिः यत्रोद्घोष्यते– मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भवेति। अत्र भाष्यन्ते विविधाः भाषाः। भोजने, वेषे भाषासु च वैविध्ये सत्यपि परस्परम् एकता भ्रातृत्वभावना च भारतदेशस्य विलक्षणं वैशिष्ट्यम् अस्ति। अस्यां भूमौ मनुष्यजन्म सुरत्वादपि समधिकं मन्यते, उक्तञ्च।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।

स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूता भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

भारतस्योत्तरस्यां दिशि **'उत्तराखण्डम्'** अभिनवप्रदेशरूपेणाभिज्ञायते। असौ हि भूभागः प्राचीनकालादेव जपतपःसाधनाधिक्येन बदरी–केदार–गङ्गोत्री–यमुनोत्री– अलकनन्दा–पञ्चप्रयाग–नन्दादेवी–वाराही–जागेश्वर–बागेश्वरप्रभृतिनैकविधतीर्थाश्रयत्वेन च परमपावनत्वेन सुप्रतिष्ठितो वर्तते। एतेषां दर्शनमात्रेणैव सकलपातकोपपातकानाम् आत्यन्तिकं प्रशमनं भवतीति अनुभावाधारितो विश्वासोऽस्ति मनीषिणाम्।

को वा न विजानाति भारतस्योत्तरस्यां दिशि देवभूम्या उत्तराखण्डस्य प्रथितं नाम। महर्षिबादरायणो वेदव्यासः अस्मिन्नेवोत्तराखण्डे पुराणानि प्रणीतवान्। इदं हि राज्यं पुराणांनां रचनास्थली, अध्यात्मभूमिः, गङ्गायमुनादिनदीनामुद्गमस्थली, कवीनां च कवितास्थलीरूपेण सुविख्यातं विद्यते। अत्र सुशोभते राज्यस्य मुकुटमणिरिव नगाधिराजो हिमालयः, यस्य वैशिष्ट्यं वर्णयता कविकुलगुरुणा कालिदासेनोक्तम्–

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।

पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥

भारतस्य प्रतिष्ठायाः कारणं तावत् विश्ववन्द्या भारतीया संस्कृतिः संस्कृतभाषा च वर्तते, नास्त्यत्र मनागपि सन्देहावसरः। संस्कृतं न केवलं भारतस्य प्रत्युत विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा देवभाषापदेनापि व्यवह्रियते। समुदीरितञ्च– **भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।** संस्कृतभाषाविषये महाभारतीयं सुभाषितमिदं प्रसिद्धम्–

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥

इदं विज्ञायापि भवन्तो नूनममन्दानन्दसन्दोहमनुभविष्यन्ति यदुत्तराखण्डराज्यस्य द्वितीया राजभाषा संस्कृतभाषा वरीवर्ति। उत्तराखण्डराज्यं निखिलेऽपि भूमण्डले प्रथमम् एतादृशं राज्यं, यस्य राज्यस्य द्वितीया राजभाषा देववाणी वर्तते। न केवलमेतावदेव प्रत्युत राज्येऽस्मिन् द्वौ संस्कृतग्रामौ अपि वर्तेते। तयोरेकः भन्तोला, कुमाऊँमण्डलस्य बागेश्वरजनपदे विलसति, द्वितीयश्च 'किमोठेति' गढवालमण्डले वर्तते। हरिद्वारनगरी ऋषिकेशश्च संस्कृतनगररूपेण समुद्घोषितौ स्तः।

अस्याः देवगिरः प्रचार-प्रसाराय, भारतीय-संस्कृतेः संरक्षणाय च केदारखण्डपुराणे मायापुरीनाम्ना प्रसिद्धेऽस्मिन् हरिद्वारे उत्तराखण्डशासनेन 'अधिसूचकाङ्केन 486/विधायी एवं संसदीयकार्यक्रमः/2005 देहरादूनम्, 21अप्रैल 2005 इति ईशवीयवर्षे 'उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयोऽयं संस्थापितः। ततः प्रभृति सततं संस्कृतभाषायाः समुन्नत्यै प्रयतमानोऽयं विश्वविद्यालयः अनुदिनमेधमानो विराजते।

अनेन उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयेन प्रारम्भत एव सम्बद्धाः षट्चत्वारिंशत्(46) संख्याकाः पारम्परिकाः संस्कृतमहाविद्यालयाः प्रदेशस्य प्रमुखेषु विभिन्नेषु जोशीमठ-गुप्तकाशी-उत्तरकाशी-श्रीनगर-हल्द्वानी-देवीधुराप्रभृतिषु तपःपूतेषु स्थलेषु भारतस्य प्रथमराष्ट्रपतिप्रमुखैः महापुरुषैः संस्थापिताः विराजन्ते।

एवमेव एकादश(11) संख्याकाः आधुनिकाः महाविद्यालयाः अपि अनेन विश्वविद्यालयेन सम्बद्धाः कौशलविकासपराणां व्यावसायिकपाठ्यक्रमाणां तावदध्ययनाध्यापनमुखेन प्रचारणे प्रसारणे च अनवरतं निरताः राजन्ते।

विश्वविद्यालयानुदानायोगनिर्देशाधारेण मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयसत्प्रेरणया च अत्रत्याः शिक्षकाः **'स्वयम्'** मूक-माध्यमेन ऑनलाइनपाठ्यक्रमनिर्माणप्रक्रियायां सक्रियां भूमिकां निर्वहन्तः संस्कृतसाहित्यस्य व्याकरणन्यायादिशास्त्राणाञ्च आधुनिकपद्धत्यापि प्रशिक्षणे संसिद्धाः नूनं स्तुत्याःसन्ति।

एवं विधैः गुणवत्तापूर्णैः शैक्षणिककार्यैः अनुदिनं विश्वविद्यालयं सत्सङ्कल्पमहिम्ना शैक्षणिकविकासराजमार्गे समानयन्तः अत्रत्या अध्यापकाः, छात्राः, कर्मचारिणः अधिकारिणश्च नूनम् सर्वोच्चश्रेण्याम् अस्य विश्वविद्यालयस्य संस्थापनेऽपि साफल्यम् अवाप्स्यन्त्येव।

एतावता पुराण-नवशिक्षणक्रमयोः विवेचनपुरस्सरं सुपरीक्ष्य सन्मार्गे प्रवर्त्तमानोऽयं संस्कृतविश्वविद्यालयः कविकुलगुरुकालिदासरीत्या नूनं सतां विदुषां बुद्धिमतां समवायः-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।

सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥

विश्वविद्यालय का परिचय

सरस्वती की समाराधना में तत्पर विद्वानों को सुविदित ही है कि विविध भाषाओं से विभूषित यह भारत देश सम्पूर्ण विश्व में मुकुटमणि के समान सुशोभित हो रहा है। इस धरातल पर भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है, यह सुप्रसिद्ध है। यह भारत भूमि मोक्षदायनी, तोषदायिनी तथा समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। इसी भूमि में मन्त्रद्रष्टा ऋषि-महर्षि हुए। महर्षि वाल्मीकि के द्वारा देववाणी में विरचित आदिकाव्य 'रामायण' को कौन नहीं जानता? अर्थात् सभी जानते हैं। इस मातृभूमि का गौरव एवं महत्त्व वेदों, पुराणों, महाकाव्यों, नाटकों में सर्वत्र वर्णित है।

इसी विश्ववार भारतीय संस्कृति का उद्घोष 'मातृ देवो भव', 'पितृ देवो भव', 'आचार्य देवो भव', 'अतिथि देवो भव' आदि स्वरूप में, सभी दिशाओं में गुञ्जायमान होता रहता है। यहीं पर अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, परन्तु आहार, वेषभूषा एवं भाषा में अनेकता होने पर भी परस्पर एकता का स्वर तथा भ्रातृभाव भारत देश की विलक्षणता से भरपूर विशेषता को प्रकाशित करता है। इस भारतभूमि में देवता भी मनुष्य योनि प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। कहा भी गया है-

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।

स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूता भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

भारत के उत्तर दिग्भाग में 'उत्तराखण्ड' एक अभिनव प्रदेश के रूप में स्थित है। प्राचीन काल से ही जप-तप की साधाना से अभिभूत होते हुए बदरी, केदार, गङ्गोत्री, यमुनोत्री, अलकनन्दा, पञ्चप्रयाग, नन्दादेवी, वाराही, जागेश्वर, बागेश्वर आदि अनेक तीर्थों के रूप में परम पवित्र यह भूभाग सुशोभित है। विद्वानों का अभिमत है कि इनके दर्शन मात्र से ही निश्चित रूप में समस्त पापों का नाश होता है।

कौन नहीं जानता, भारत की उत्तर दिशा में स्थित देवभूमि उत्तराखण्ड को? महर्षि वादरायण वेदव्यास ने इसी देवभूमि में पुराणों की संरचना की। यही राज्य पुराणों की रचना स्थली, वीरों की अध्यात्मभूमि, गंगा-यमुना आदि नदियों की उद्गमस्थली, कवियों की कवितास्थली के रूप में सुविख्यात है। पर्वतों का राजा हिमालय मुकुटमणि के समान इस राज्य की शोभा बढ़ा रहा है। इसकी विशेषता का वर्णन करते हुए कविकुलगुरु कालिदास ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा है -

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।

पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥

भारत की प्रतिष्ठा का मूल, विश्व वन्दनीय भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा है। संस्कृत भाषा भारत की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व की प्राचीनतम भाषा है। संस्कृत भाषा देव भाषा के रूप में भी जानी जाती है। कहा भी है कि - **"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।"** संस्कृत भाषा के विषय में यह सुभाषित अत्यन्त प्रसिद्ध है-

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥

यह जानकर आप निश्चित ही अत्यन्त आनन्द का अनुभव करेंगे कि उत्तराखण्ड की द्वितीय राजभाषा संस्कृत है। सम्पूर्ण विश्व में उत्तराखण्ड ऐसा प्रथम राज्य बन गया है जिसकी द्वितीय राजभाषा संस्कृत है। इतना ही नहीं इस राज्य में दो संस्कृत ग्राम भी हैं। एक 'भन्तोला' कुमाऊँ मण्डल के बागेश्वर जनपद में स्थित है तथा द्वितीय 'किमोठा' गढ़वाल मण्डल के चमोली जनपद में अवस्थित है। हरिद्वार व ऋषिकेश को संस्कृत नगरी के रूप में भी घोषित किया गया है। प्रदेश –शासन की इन उद्घोषणाओं एवं संस्कृतानुराग से उत्तराखण्ड में संस्कृत का अद्वितीय स्थान एवं देवभाषा के रूप में देवभूमि में महत्त्व सहज ही समझा जा सकता है।

संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार एवं भारतीय संस्कृति के संरक्षण के पुनीत उद्देश्य को पूर्ण करने की दृष्टि से ही केदारखण्ड पुराण में मायापुरी नाम से प्रथित हरिद्वार नगरी में उत्तराखण्ड शासन के द्वारा 'अधिसूचना 486/विधायी एवं संसदीय कार्यक्रम/2005 देहरादून', 21 अप्रैल 2005 ई0 में यह **उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय** स्थापित किया गया। संस्कृत भाषा एवं संस्कृत भाषा में निबद्ध शास्त्रों के समुन्नयन एवं संरक्षण के लिए अपने स्थापना काल से ही यह विश्वविद्यालय अनवरत प्रयत्नशील है।

इस उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध 46 पारम्परिक संस्कृत महाविद्यालय प्रदेश के जोशीमठ–गुप्तकाशी–उत्तरकाशी–श्रीनगर–हल्द्वानी–देवीधुरा आदि तपःपूत स्थलों पर विराजमान हैं। जिनकी स्थापना भारत के प्रथम राष्ट्रपति प्रमुख महापुरुषों द्वारा की गयी है।

इसी प्रकार 11 आधुनिक महाविद्यालय भी इसी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं जो कौशल विकासपरक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के अध्ययन–अध्यापन द्वारा प्रचार प्रसार में निरन्तर लगे हुए हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सम्प्रेरणा से यहाँ के शिक्षक "स्वयम्" मूक–माध्यम से ऑनलाइन पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते हुए संस्कृत साहित्य–व्याकरण–न्यायादिशास्त्रों के आधुनिक पद्धति से प्रशिक्षण में तत्पर हैं जो निश्चय ही स्तुत्य है।

इस प्रकार के गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिककार्यों के द्वारा प्रतिदिन विश्वविद्यालय को सत्सङ्कल्प की महिमा से शैक्षणिकविकास के राजमार्ग पर लाने वाले यहाँ के अध्यापक, छात्र, कर्मचारी, अधिकारी निश्चय ही सर्वोच्च श्रेणी में इस विश्वविद्यालय को लाने के लि सफलता को प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार प्राचीन–नवीन शिक्षणक्रम विवचनपूर्वक परीक्षण करके सन्मार्ग में प्रवर्तमान यह संस्कृत विश्वविद्यालय कविकुलगुरु कालिदास की रीति से निश्चय ही सन्तों, विद्धानों व बुद्धिमानों का एक समुदाय है।

जो पुराना है वह पुराना होने के कारण उत्तम अथवा उपयोगी नहीं है और जो नया है वह नया होने के कारण त्याज्य अथवा निन्द्य नहींहै। विद्वान् लोग किसी भी वस्तु की परीक्षा करके ही उसकी अच्छाई–बुराई अथवा उपयोगिता–अनुपयोगिता को स्वीकार करते हैं। मूढ़ व्यक्ति दूसरे के मत पर अवलम्बित रहता है।

डॉ0 कामाख्या कुमार
विभागाध्यक्ष
योग विज्ञान विभाग

डॉ0 लक्ष्मीनारायण जोशी
सहायक आचार्य
योग विज्ञान विभाग

योग विज्ञान विभाग

भारतीय प्राच्य विद्या एवं संस्कृति में योग विज्ञान का स्थान सर्वोपरि है। आध्यात्मिक उन्नति या शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की आवश्यकता को प्रायः सभी ने मुक्तकंठ से स्वीकार किया है। महर्षि पंतजलि ने उसे योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः एवं भगवान कृष्ण ने समत्वं योग उच्यते के माध्यम से इसे परिभाषित किया है। वर्तमान में जीवनशैली से संबन्धित समस्याओं के समाधान एवं आधुनिक औषधियों के दुष्प्रभाव के विकल्प के रूप में योग चिकित्सा को सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त हो रही है। 21 जून, अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जाना, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार में भी योग विज्ञान विषय को विशेष स्थान प्राप्त है। योग विज्ञान विभाग विश्वविद्यालय के स्थापना काल से ही योग विषय में एक वर्षीय डिप्लोमा, छः मासीय सर्टिफिकेट एवं द्विवर्षीय योगाचार्य (एम0ए0योग) के पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। विभाग में सत्र 2013-14 से पी-एच0डी0 उपाधि की भी शुरुआत की गई है।

विद्यार्थियों को आधुनिक शोध एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने हेतु 17 अप्रैल, 2017 को माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर ने नवनिर्मित योग विज्ञान प्रयोगशाला का लोकार्पण किया। इससे यहाँ पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा के साथ-साथ नए अनुसंधान से संबन्धित ज्ञान को भी प्राप्त करने में सहायता मिलेगी, जो उन्हें भविष्य में रोजगारोन्मुख बनाने में सहायता प्रदान करेगा।

योग विज्ञान विभाग में प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थियों को हमारी शुभकामनाएं।

डॉ0 कामाख्या कुमार

विभागाध्यक्ष

9258369603

एम.ए योगाचार्य प्रवेशपरीक्षा – सत्र 2022–23

आवश्यक तिथियाँ

IMPORTANT DATES

1. विश्वविद्यालय की वैबसाइट पर आवेदन पत्र अपलोड करने की तिथि	–	22.06.2022
2. विश्वविद्यालय की वैबसाइट से आवेदन पत्र प्राप्त करने की तिथि	–	22.06.2022
4. विश्वविद्यालय में आवेदन पत्र डाक द्वारा जमा करने की अन्तिम तिथि	–	20.07..2022 (सायं 05:00 बजे तक)
5. प्रवेश परीक्षा की तिथि	–	31.07.2022 (विश्वविद्यालय परिसर)
6. वेबसाइट पर प्रवेश परीक्षा की उत्तर कुंजी अपलोड करने की तिथि	–	03.08..2022
7. अभ्यर्थियों के लिए प्रश्नगत आपत्तियां दर्ज करने की अन्तिम तिथि	–	05.08.2022
8. परीक्षा परिणाम तिथि (सम्भावित तिथि)	–	08.08.2022
9. प्रथम काउन्सलिंग तिथि	–	अगस्त द्वितीय सप्ताह 2022

आवश्यक सूचनाएं

- स्पीडपोस्ट/पंजीकृत डाक द्वारा प्रेषित आवेदन पत्र ही स्वीकृत किये जायेंगे।
- प्रवेश परामर्श (काउसलिग) विश्वविद्यालय परिसर हरिद्वार में होगा।
- विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइट देंखे www.usvv.ac.in

एम.ए. योगाचार्य प्रवेश परीक्षा

आवेदन पत्र उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.usvv.ac.in से डाउनलोड करके वित्त नियन्त्रक, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पक्ष में निर्धारित शुल्क का डिमाड ड्राफ्ट बनाकर, अथवा विश्वविद्यालय के बैंक अकाउण्ट संख्या– 50100058601301 आई. एफ. एस. सी. – HDFC0000943 खाता धारक का नाम – उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, बैंक – एच. डी. एफ. सी., हरिद्वार के खाते में ऑनलाइन/नेट बैंकिंग के द्वारा पैमेंट कर उसकी रसीद आवेदन पत्र के साथ संलग्न कर कुलसचिव उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार–दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग, बहादराबाद, हरिद्वार पिनकोड 249402 के पते पर प्रेषित किया जाना चाहिए।

कुलसचिवः
उत्तराखण्ड–संस्कृत–विश्वविद्यालयः हरिद्वारम्
हरिद्वार–दिल्ली–राष्ट्रिय–राजमार्गः
पो0ः बहादराबादं, हरिद्वारम् 249402, उत्तराखण्डम्

दी गई फीस लौटाई नहीं जायेगी।

अधिक जानकारी के लिए इन दूरभाष संख्याओं पर (प्रातः 10.00 बजे से सायं 05.00 बजे तक) सम्पर्क कर सकते है।

9258369603, 9897703424

आवश्यक सूचनाएं हिन्दी में

1. अभ्यर्थियों को सलाह दी जाती है कि पहले बुकलेट को ध्यान से पढ़े। इस पुस्तिका में अनेक प्रकार की सूचनाएं हैं जो प्रवेश से सम्बन्धित हैं।
2. आवेदन–पत्र में दी गयी सूचना का सत्यापन परीक्षा और प्रवेश के समय होगा। किसी भी प्रकार की असत्य सूचना देने पर नियमानुसार कानूनी कार्यवाही की जाएगी। परीक्षा से वंचित करना/निरस्त करना भी इसमें शामिल है।
3. आवेदन–पत्र पर नाम व तिथि सहित फोटो साफ और नया लगाएं। तीन माह से पहले खिंचवाया गया फोटो पुराना माना जाएगा और परीक्षा के समय/प्रवेश के समय यदि फोटो नहीं मिलान करेगा तो परीक्षा से निष्कासन/कानूनी कार्यवाही अथवा/प्रवेश निरस्तीकरण भी संभव हो सकता है।
4. प्रवेश परीक्षा सत्र 2022–23 की वरीयता सूची केवल 2022–23 के लिए ही मान्य होगी।
5. पूर्ण रूप से भरा हुआ आवेदन पत्र 20 जुलाई, 2022 सायं 5:00 बजे तक कुलसचिव, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार के कार्यालय में अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। अन्तिम तिथि के बाद प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।
6. आवेदन पत्र के लिफाफे के ऊपर मोटे अक्षर में आपका नाम अंग्रेजी के प्रथम अक्षर यथा SURESH=(S) अवश्य लिखा जाय तथा श्री/श्रीमती/कुमारी/डॉ0 न लिखा जाय।
7. छायाचित्रों को स्टेपल न करें, गोंद से चिपकाएं।
8. आवेदन पत्र उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.usvv.ac.in से डाउनलोड करके वित्त नियन्त्रक, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पक्ष में निर्धारित शुल्क का डिमाड ड्राफ्ट बनाकर, अथवा विश्वविद्यालय के बैंक अकाउण्ट संख्या– 50100058601301 आई. एफ. एस. सी. – HDFC0000943 खाता धारक का नाम – उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, बैंक – एच. डी. एफ. सी., हरिद्वार के खाते में ऑनलाइन/नेट बैंकिंग के द्वारा पैमेंट कर उसकी रसीद आवेदन पत्र के साथ संलग्न कर कुलसचिव उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार–दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग, बहादराबाद, हरिद्वार पिनकोड 249402 के पते पर प्रेषित किया जाना चाहिए।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार

1. परिचय–

उत्तराखण्ड शासन ने अधिसूचना संख्या 486/विधायी एवं संसदीय कार्य/2005 द्वारा उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की। राज्य स्थापना के पूर्व प्रदेश के वे समस्त संस्कृत महाविद्यालय जो सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो गए। उत्तराखण्ड भारत गणराज्य का एक मात्र राज्य है जिसने संस्कृत को दूसरी राजभाषा घोषित किया है। उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत विद्या केन्द्र के रूप में सुपरिचित अग्रणी संस्था है। जिसे राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा मान्यता प्राप्त है। प्रदेश के राज्य विश्वविद्यालय के रूप में यह विश्वविद्यालय स्थापित है। विश्वविद्यालय के योग विज्ञान विभाग द्वारा सम्पूर्ण उत्तराखण्ड राज्य में योग छात्राध्यापकों के माध्यम से संस्कृत शिक्षा, एक नवीन दिशा को प्राप्त करेगी। शिक्षाशास्त्री कक्षा में प्रवेश पूर्व एम.ए योगाचार्य परीक्षा के माध्यम से होगा। परीक्षा का माध्यम केवल संस्कृत ही होगा।

2. एम.ए योगाचार्य पाठ्यक्रम

योगाचार्य पाठ्यक्रम की अवधि दो शैक्षिक वर्ष है। शिक्षण एवं परीक्षा का माध्यम केवल हिंदी है। आवेदन पत्र भरते समय आवेदक भली भांति विचार करने के उपरान्त ही आवेदन करें। प्रवेश के बाद शिक्षण और परीक्षा दोनों ही हिंदी माध्यम से होगी। प्रत्येक अभ्यर्थी के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का नियमित अध्ययन अनिवार्य है। नियमित पाठयक्रम से तात्पर्य है :–

विद्यार्थी उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के परिसर में दो शैक्षिक वर्ष में दिये गये कक्षा व्याख्यानों मे से न्यूनतम 75 प्रतिशत व्याख्यानों में उपस्थित रहेगा। सम्पूर्ण अवधि मे केवल बीस दिन का अवकाश (आकस्मिक तथा रुग्णावकाश) नियमानुसार कुलपति तथा विभागाध्यक्ष की विशेष अनुमति से ही दिया जा सकता है। बिना सूचना तथा अनुमति के दस दिन लगातार अनुपस्थिति के कारण छात्र का नाम काटा जा सकता है।

2.एम.ए.योगाचार्य परीक्षा के लिए न्यूनतम योग्यता –

किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से 10+2+3 वर्षीय पाठ्यक्रम में स्नातक किसी भी शाखा से तत्समकक्ष परीक्षा में न्यूनतम 40 प्रतिशत प्राप्तांक सहित उत्तीर्ण।

आवेदन पत्र के साथ अर्हता–परीक्षा में उत्तीर्ण होने के प्रमाण संलग्न होने चाहिए। यदि परीक्षाफल घोषित न हुआ हो तो प्रवेश के समय साक्षात् अथवा गोपनीय परिणाम सम्बन्धित प्रमाणपत्र आदि विश्वविद्यालय परिसर में जमा करने पर ही प्रवेश दिया जायेगा अन्यथा प्रवेश की अर्हता निरस्त हो जायेगी।

अप्रकाशित परीक्षा परिणाम वाले अभ्यर्थियों के अस्थायी प्रवेश पर विचार किया जायेगा

टिप्पणी – (1) आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों (एस.सी./एस.टी./ओ.बी.सी.) आर्थिक रूप से कमजोर (EWS) छात्रों व विकलांग छात्रों के प्रवेश के लिए न्यूनतम अर्हता में नवीन शासनादेशानुसार छूट प्रदान की जायेगी।

(2) परीक्षा परिणाम घोषित होने के उपरान्त उन्हीं अभ्यर्थियों को प्रवेश दिया जायेगा जो अर्हता सम्बन्धी अपने मूल प्रमाणपत्रों/अंकपत्रों को प्रवेश के समय प्रस्तुत कर सकेंगे।

3.परीक्षाकेन्द्र

एम.ए योगाचार्य प्रवेश परीक्षा विश्वविद्यालय मुख्यालय हरिद्वार के केन्द्रों पर होगी। केन्द्र निर्धारण का अंतिम निर्णय विश्वविद्यालय द्वारा ही किया जायेगा। केन्द्रनिर्धारण के बाद कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा।

4.चयन विधि

एम.ए योगाचार्य कक्षा में प्रवेश, योगाचार्य प्रवेश परीक्षा नामक लिखित परीक्षा द्वारा होगा । प्रवेश चाहने वाले सभी छात्र–निर्धारित आवेदन–पत्र पर आवेदन करें। सभी अर्हता प्राप्त प्रत्याशियों को लिखित परीक्षा के लिए उपस्थित होना पड़ेगा।

प्रवेश पत्र सभी अर्ह छात्रों को विश्वविद्यालय की वेबसाइट से निकालना होगा। प्रवेश के लिए योग्यता सूची बनाई जाएगी। जो कि विश्वविद्यालय में तथा वेबसाइट में प्रदर्शित की जायेगी।

5. आरक्षित स्थान

(1) एम.ए योगाचार्य पाठ्यक्रम में विश्वविद्यालय/सम्बद्ध महाविद्यालयों की निर्धारित छात्र संख्या 2000 है।

6.आवेदन से पूर्व ध्यान देने योग्य तथ्य–

1. केवल अर्ह छात्र लिखित परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। यदि कोई छात्र निर्धारित योग्यता के अभाव में भी पूर्व एम.ए योगाचार्य परीक्षा में सम्मिलित हो जाता है तो वह स्वयं व्यक्तिगत रूप से इसके परिणाम के लिए उत्तरदायी होगा।
2. एम.ए योगाचार्य का पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। विश्वविद्यालय /सम्बद्ध महाविद्यालयों में निर्धारित संख्या के अनुसार वरीयता क्रम से ही प्रवेश दिया जायेगा।
3. प्रवेशार्हता की जांच और आरक्षणादि के निश्चय का निर्णय विश्वविद्यालय मुख्यालय के अधीन है।
4. प्रवेश के विषय में विश्वविद्यालय के मा. कुलपति का निर्णय ही अन्तिम होगा।
5. न्यायिक विषयों में हरिद्वार न्यायालय का ही क्षेत्राधिकार होगा।
6. उत्तरपुस्तिकाओं का पुनः मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।
7. एम.ए योगाचार्य परीक्षा में प्रवेश के समय प्रवेश पत्र के बिना प्रवेश नही दिया जायेगा।

7. प्रश्नपत्रों की रूपरेखा–

प्रवेश परीक्षा '100' अंक की होगी जिसमें 100 अंको के 100 बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे।

(क) सामान्य ज्ञान
(ख) समसामयिक जानकारियां
(ग) सामान्य वितर्क रिजनिंग
(घ) सामान्य योग्यता एप्टीटयूट
(ड) सामान्य संस्कृत
(च) योग एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सामान्य जानकारी
(छ) मानव शरीर की सामान्य जानकारी
(ज) योग की पृष्ठभूमि एवं योगियों का परिचय
(झ) भारतीय दर्शन की सामान्य जानकारी

परीक्षा तिथि– एम.ए योगाचार्य प्रवेश परीक्षा तिथि 31 जुलाई, 2022 (रविवार) को होगी।

प्रश्नपत्र की भाषा– प्रश्न पत्र हिंदी भाषा में होगा।

परीक्षा अवधि– एम.ए योगाचार्य प्रवेश परीक्षा की अवधि 02:00 घण्टे की होगी, जिसमें 100 बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

8. प्रवेश परीक्षा हेतु निर्देश :–

परीक्षा–कक्ष में प्रवेश हेतु परीक्षा केन्द्र के नामोल्लेख सहित प्रवेश पत्र प्रार्थी 20 जुलाई, 2022 के बाद विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.usvv.ac.in से प्राप्त कर सकते हैं।

प्रवेश पत्र खो जाने/नष्ट हो जाने पर द्वितीय प्रतिलिपि 20/– रू0 शुल्क देकर परीक्षा केन्द्र से प्राप्त की जा सकती है। एक से अधिक आवेदन पत्र भरने पर प्रवेश पात्रता रद्द कर दी जायेगी।

12.(अ) आवेदन पत्र के साथ आवश्यक संलग्नक पत्र –

1. आयु सूचक प्रमाण–पत्र की स्वयं सत्यापित प्रतिलिपि।
2. हाई स्कूल, इण्टरमीडिएट, स्नातक, स्नातकोत्तर परीक्षा प्राप्तांक की स्वयं सत्यापित प्रतिलिपि।
3. आवेदन पत्र निर्धारित लिफाफे में डी डालकर प्रेषित करें।

(ब) आवेदन पत्र भेजने का क्रम

1. आवेदन–पत्र पूर्ण रूप से भरा हुआ हो।
2. आयुसूचक प्रमाणपत्र संलग्न हो।
3. प्राप्तांक की स्वयं सत्यापित छायाप्रति संलग्न हो।
4. स्वास्थ्य विषयक प्रमाणपत्र (प्रवेश के समय) बाद में देना होगा।

विशेषः–

1. डाक के कारण होने वाले विलम्ब के लिए विश्वविद्यालय उत्तरदायी नही होगा।

यदि कोई अभ्यर्थी असत्य तथ्यों के आधार पर या अन्य किसी उपाय से एम.ए योगाचार्य पाठ्यक्रम में प्रवेश लेता है तो वास्तविकता सामने आने पर उसका प्रवेश निरस्त कर दिया जायेगा।

योगाचार्य/पी.जी.डी. योग का शुल्क विवरण

क्र.सं.	विवरण	निर्धारित शुल्क
01	प्रवेश शुल्क	200.00
02	विभाग शुल्क	100.00
03	परिचय-पत्र-शुल्क	50.00
04	वाचनालय पुस्तकालय शुल्क	150.00
05	स्थानान्तरण प्रमाण पत्र (टी.सी.) शुल्क	100.00
06*	निर्धन छात्र सहायता शुल्क	200.00
07	क्रीड़ा शुल्क	200.00
08	सांस्कृतिक कार्यक्रम शुल्क	100.00
09	वार्षिक पत्रिका शुल्क	100.00
10	अंङ्केक्षण शुल्क (प्रति प्रश्नपत्र)	100.00
11	कम्प्यूटर (संङ्कणक शुल्क)	100.00
12	विकास शुल्क	200.00
13	नामांकन शुल्क	200.00
14	उपाधि शुल्क	200.00
15	शिक्षण शुल्क	10,000.00
16	परीक्षा शुल्क (प्रति सेमेस्टर)	1,000.00
17	प्रव्रजन शुल्क	100.00
18	छात्र कल्याण परिषद् शुल्क (विश्वविद्यालय हेतु)	50.00
19	अस्थायी प्रमाणपत्र का शुल्क	50.00
20	प्रमाणपत्र की द्वितीय प्रति का शुल्क	200.00
21	अंकतालिका की द्वितीय प्रति का शुल्क	50.00
22	पुस्तकालय सुरक्षा राशि (स्नातक छात्रों के लिये)	500.00
23	पुस्तकालय सुरक्षा राशि (स्नातकोत्तर छात्रों के लिये)	500.00
24**	क्रीडा शुल्क सम्बद्ध महाविद्यालय हेतु	200.00

* निर्धन छात्रों की सहायता हेतु मा0 कुलपति द्वारा तीन सदस्यों की एक समिति गठित की जोयगी।

** सम्बद्ध महाविद्यालयों से क्रीड़ा शुल्क के रूप में प्रतिछात्र रू. 200.00 लिया जायेगा।

योग प्रमाण पत्र का शुल्क विवरण

क्र.सं.	विवरण	निर्धारित शुल्क
01	प्रवेश शुल्क	200.00
02	विभाग शुल्क	100.00
03	परिचय–पत्र–शुल्क	50.00
04	वाचनालय पुस्तकालय शुल्क	150.00
05	स्थानान्तरण प्रमाण पत्र (टी.सी.) शुल्क	100.00
06*	निर्धन छात्र सहायता शुल्क	200.00
07	क्रीड़ा शुल्क	200.00
08	सांस्कृतिक कार्यक्रम शुल्क	100.00
09	वार्षिक पत्रिका शुल्क	100.00
10	अंङ्केक्षण शुल्क (प्रति प्रश्नपत्र)	100.00
11	कम्प्यूटर (संङ्कणक शुल्क)	100.00
12	विकास शुल्क	200.00
13	नामांकन शुल्क	200.00
14	उपाधि शुल्क	200.00
15	शिक्षण शुल्क	6,000.00
16	परीक्षा शुल्क (प्रति सेमेस्टर)	600.00
17	प्रव्रजन शुल्क	100.00
18	छात्र कल्याण परिषद् शुल्क (विश्वविद्यालय हेतु)	50.00
19	अस्थायी प्रमाणपत्र का शुल्क	50.00
20	प्रमाणपत्र की द्वितीय प्रति का शुल्क	200.00
21	अंकतालिका की द्वितीय प्रति का शुल्क	50.00
22	पुस्तकालय सुरक्षा राशि (स्नातक छात्रों के लिये)	500.00
23	पुस्तकालय सुरक्षा राशि (स्नातकोत्तर छात्रों के लिये)	500.00
24**	क्रीडा शुल्क सम्बद्ध महाविद्यालय हेतु	200.00

* निर्धन छात्रों की सहायता हेतु मा0 कुलपति द्वारा तीन सदस्यों की एक समिति गठित की जोयगी।

** सम्बद्ध महाविद्यालयों से क्रीड़ा शुल्क के रूप में प्रतिछात्र रू. 200.00 लिया जायेगा।

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बद्ध महाविद्यालयों की सूची

1. श्रीभगवानदासआदर्शसंस्कृतमहाविद्यालय, हरिद्वार।
2. श्री ऋषिकुलविद्यापीठब्रह्मचर्याश्रम, हरिद्वार।
3. श्री ऋषिसंस्कृतमहाविद्यालय, निर्धन निकेतन, खड़खड़ी, हरिद्वार।
4. श्रीगुरुकुलमहाविद्यालय, ज्वालापुर हरिद्वार।
5. श्री जय भारतसाधुसंस्कृतमहाविद्यालय, सं0 तपोनिधि निरंजनी अखाड़ा हरिद्वार।
6. श्रीजगद्देवसिंहसंस्कृतमहाविद्यालय, सप्तऋषि आश्रम, सप्तसरोवर हरिद्वार।
7. श्रीरामानुजश्रीवैष्णवसंस्कृतमहाविद्यालय, हरिद्वार।
8. श्रीजगद्गुरुश्रीचन्दसंस्कृतमहाविद्यालय, भगवद्धाम हरिद्वार।
9. श्रीउदासीनसंस्कृतमहाविद्यालय, पंचायती अखाड़ाबड़ा कनखल हरिद्वार।
10. श्रीगरीबदासीय साधुसंस्कृतमहाविद्यालय, जगजीतपुर हरिद्वार।
11. श्रीनिर्मलसंस्कृतमहाविद्यालय, हरिद्वार।
12. श्रीब्रह्मचारीरामकृष्ण संस्कृतमहाविद्यालय, पालीवाल धर्मशाला हरिद्वार।
13. श्रीगुरुमण्डलाश्रमसंस्कृतमहाविद्यालय, हरिद्वार।
14. श्रीजयरामसस्कृतमहाविद्यालय, ऋषिकेश।
15. श्रीदर्शनमहाविद्यालय मुनि की रेती, पो0 शिवानन्द नगर ऋषिकेश।
16. दैवीसम्पद् अध्यात्मसंस्कृतमहाविद्यालय, परमार्थ निकेतन पो0 स्वर्गाश्रम पौड़ी गढ़वाल।
17. श्रीपंजाबसिन्ध क्षेत्र साधुमहाविद्यालय, ऋषिकेश।
18. श्रीमुनीश्वरवेदाष संस्कृतमहाविद्यालय, ऋषिकेश।
19. श्री 108 कालीकमलीवालेरामनाथजी छात्रहितकारिणी संस्कृत पाठशाला ऋषिकेश।
20. श्रीगुरुरामराय लक्ष्मण संस्कृत महाविद्यालय देहरादून।
21. श्रीशिवनाथसंस्कृतमहाविद्यालय, 62, प्रीतमपथ डालनवाला देहरादून।
22. द्रोणस्थलीआर्षकन्यागुरुकुलमहाविद्यालय, किशनपुरदेहरादून।
23. श्रीकेदारनाथसनातन धर्मउपाधि संस्कृत महाविद्यालय, उत्तराखण्ड विद्यापीठ रुद्रप्रयाग।
24. श्रीकेदारनाथआदर्शसंस्कृतमहाविद्यालय शोणितपुर, लमगोण्डी रुद्रप्रयाग।
25. श्रीविश्वनाथस्नातकोत्तरसंस्कृतमहाविद्यालय, उजेली उत्तरकाशी।
26. श्रीबद्रीनाथराजकीय संस्कृत महाविद्यालय, नईटिहरी।
27. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, चम्बा टिहरी गढ़वाल।
28. श्रीबदरीनाथवेद–वेदांगस्नातकोत्तरसंस्कृतमहाविद्यालय,जोशीमठ चमोली।
29. श्री 1008 स्वामीसच्चिदानन्दसरस्वतीसंस्कृतमहाविद्यालय, मण्डल चमोली।
30. श्री 108 स्वामीसच्चिदानन्दवेदभवनसंस्कृतमहाविद्यालय, रुद्रप्रयाग।
31. श्रीबदरीशकीर्तिसंस्कृतविद्यापीठडिम्मरसिमली चमोली।
32. संस्कृतज्योतिषमहाविद्यालय सटियाना, पो0 थालावैण्ड चमोली।
33. श्रीरघुनाथकीर्तिआदर्शसंस्कृतमहाविद्यालय, देवप्रयागपौड़ी गढ़वाल।
34. श्रीसनातनधर्मसंस्कृतमहाविद्यालय, मयकोटी रुद्रप्रयाग।
35. श्रीजयदयालसंस्कृतमहाविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल।
36. श्रीसरस्वतीसंस्कृतमहाविद्यालय, वसुकेदार रुद्रप्रयाग।
37. श्रीज्वालामुखीसंस्कृतमहाविद्यालय, देवढुंग विनयखाल, टिहरी गढ़वाल।
38. बाराहीदेवीसंस्कृतमहाविद्यालय, देवीधुरा चम्पावत।
39. श्रीमहादेवगिरिस्नातकोत्तरसंस्कृतमहाविद्यालय, हल्द्वानी।
40. श्रीसनातन धर्मसंस्कृतमहाविद्यालय, रेलवे बाजार हल्द्वानी।
41. श्रीनारायण संस्कृतमहाविद्यालय, कमेड़ीदेवी बागेश्वर।

42. श्रीसनातन धर्मसंस्कृतमहाविद्यालय, लण्ढौर मसूरी।
43. श्रीसनातनसत्संगसंस्कृतमहाविद्यालय काशीपुर।
44. बालिकासंस्कृतमहाविद्यालय, सेन्दुलकेमर, टिहरी गढ़वाल।
45. श्रीज्वालपादेवीआदर्शसंस्कृतमहाविद्यालय, पो0–पाटीसैण, जि0–पौड़ी गढ़वाल–246167
46. श्रीमद् दयानन्दआर्षज्योतिर्मठगुरुकुल, आर्यपुरम्, दूनवाटिका भाग–02, पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड)।

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में सम्बद्धता

47. वैदिकआश्रमगुरुकुलमहाविद्यालय कण्वाश्रम कलालघाटी कोटद्वार।
48. शीतलवैदिकसंस्थान, ग्राम–फलसुआबडकोट, पो0–डाण्डी, वाया–रानीपोखरी देहरादून–248185
49. उत्तरांचल आयुर्वेदिक कालेज राजपुर देहरादून।
50. हिमालयीय आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, फतेहपुरटाण्डा, जीवनवाला, देहरादून।
51. उत्तराखण्ड आयुर्वेदिक कॉलेज, रामपुररोड़, हल्द्वानी।
52. हरदेव सिंह संस्कृत कॉलेज, ग्राम–रायपुर मंडैया, पो0–रायपुर, तहसील–जसपुर (ऊधमसिंह नगर)।
53. अनमोल भारतीय उपचार एवं योग संस्थान, निकट उज्ज्वल भवन, जी0एम0एस0 रोड़, देहरादून।
54. जसपालराणा इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एण्ड टैक्नोलॉजी, देहरादून।
55. यूनिवर्सल इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, 102 ताज काम्पलेक्स नजदीक अम्बेडकर चौक, ऋषिकेश।
56. अमृत कॉलेज ऑफ एजुकेशन धनौरी (रुड़की), हरिद्वार।
57. माँ पूर्णागिरी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चम्पावत।
58. सीताराम डिग्री कॉलेज, रुड़की।
59. संजीवनी योग एवं नेचुरोपैथी संस्थान, खसरा नं.–478, ग्राम–सालियर, मु. परगना, भगवानपुर, तहसील–रुड़की, जिला–हरिद्वार।
60. बी.आर.एस. महाविद्यालय, टीकमपुर, सुल्तानपुर, जनपद–हरिद्वार।
61. एस.जे.एस. ग्रुप ऑफ एजुकेशन (समग्र जनकल्याण समिति) खेड़ा लक्ष्मीपुर, जसपुर, जनपद–ऊधमसिंहनगर।
62. हिमालयन योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, शिक्षण संस्थान, गनगर इन्क्लेव, इन्द्रपुर, जोगीवाला, जनपद–देहरादून।
63. चमनलालमहाविद्यालय, लण्ढौरा, जनपद–हरिद्वार।
64. हरि ओम सरस्वती डिग्री कॉलेज, धनौरी, जनपद–हरिद्वार।
65. सत्त्वयोगपीठ, अमितग्राम–गुमानीवाला, ऋषिकेश।
66. जगन्नाथविश्वाकॉलेज, लालतप्पड़ माजरीग्राण्ट, नजदीक–नेचरविला, हरिद्वार रोड, देहरादून।
67. देवेश्वरी योगपीठ विद्यापीठ, ग्राम–हरिपुरकलाँ, वाया–रायवाला, जनपद–देहरादून।
68. दरमावैदिकसंस्थान, आशुतोषनगर, नेहरु मार्ग, देहरादून रोड, ऋषिकेश।
69. जाहन्वी आयुर्वेदा एवं योग केन्द्र, हरिद्वार।
70. ऋषिकेश योग धाम संस्थान, तपोवन, ऋषिकेश, टिहरी गढ़वाल।
71. विशम्बरसहाय मेडिकलकॉलेज एवं रिसर्च सेन्टर, रुड़की।
72. मोहिनीदेवीडिग्रीकॉलेज, इकबालपुर रोड, आसफ नगर, रुड़की।
73. महेन्द्र सिंह डिग्री कॉलेज, बुधवा शहीद बुग्गावाला, हरिद्वार।
74. उगते यूनिवर्सल गैरोला टूरिज्म एवं टैक्नीकल एक्सीलेंसी (UGTE) नजदीक नेपाली फॉर्म तिराहा देहरादून रोड, खैरीखुर्द, श्यामपुर, ऋषिकेश।
75. श्री साँई इन्स्टीट्यूट, गोविन्दपुरी, हरिद्वार (मानव शैक्षणिक प्रशैक्षणिक एवं विकास संस्थान, हरिद्वार द्वारा संचालित)।
76. डी.डी. कॉलेज, देहरादून।
77. ऋषि योगसंस्थान, पूर्वीनाथ नगर, ज्वालापुर, हरिद्वार।
78. रुड़की दिव्य योगसंस्थान, चुड़ियाला रोड, भगवानपुर।
79. आर्यन योग महाविद्यालय, भगेड़ी महावतपुर, रुड़की।
80. श्रीमती मंजीरा देवी आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज, रुकमणी नगर, हिटाणू धनारी, उत्तरकाशी।

उत्तराखण्ड-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्
Uttarakhand Sanskrit University, Haridwar

पी.जी.डी.योग-प्रवेश-आवेदन-पत्रम्/2022-2023
P.G.D. Yog Admission Form for Session 2022-23

कन्ट्रोल नम्बर

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)	रोल नम्बर

फार्म संख्या

आवेदन पत्र भरने से पूर्व विवरण पुस्तिका के निर्देशों को पढकर पालन करें। आपके द्वारा दी गई सूचनाओं में परिवर्तन किया जाना सम्भव नहीं होगा। पत्राचार की सुविधा के लिए निर्दिष्ट स्थानों पर स्पष्ट पता लिखें। फार्म संख्या नोट कर लें एवं पत्र व्यवहार में अवश्य प्रेषित करें। फार्म के साथ नगद या बैंक ड्राफ्ट सामान्य एवं अ0पि0वर्ग हेतु 600/-(रूपये छः सौ) एवं अनु0जाति एवं अनु0जनजाति हेतु 300/- (रूपये तीन सौ) मात्र का **वित्त नियंत्रक उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार** के पक्ष में देय हो, का विवरण निर्धारित स्थान पर अंकित करें।

नगद/ड्राफ्ट शुल्क सामान्य एवं अ0पि0वर्ग हेतु 600/- (रूपये छः सौ) एवं अनु0जाति एवं अनु0जनजाति हेतु300/- (रूपये तीन सौ) द्वारा भेजने का विवरण

ड्राफ्ट संख्या/कैश..तिथि..

बैंक का नाम..शाखा/जिला..

अभ्यर्थी के संबंध में व्यक्तिगत सूचनायें (हाईस्कूल प्रमाण पत्र के अनुसार, प्रमाण पत्र सहित दें।)

पूरा नाम (हिन्दी में) :..

अंग्रेजी में(ब्लॉक में) : | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

पिता/पति का नाम (हिन्दी में)..

पिता का नाम (अंग्रेजी में) : | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

आधार कार्ड संख्या | | | | | | | | | | | | | ई.मेल..

जन्म तिथि/आयु [|] दिनांक [|] माह [| | |] वर्ष

आरक्षण- **CATEGORY TICK IN APPROPRIATE BOX**-एकदम सही कैटेगरी के बाक्स में टिक करें।
FF-स्वतंत्रता सेनानी आश्रित, **PH**-विकलांग, सैन्य कर्मचारी के स्वयं-**Ex ARMY**-

सामान्य श्रेणी**GN** ☐	अ. पिछड़ा वर्ग **OBC** ☐	अनुसूचित जाति **SC**	अनुसूचित जनजाति **ST** ☐
☐ **GN**	☐ **OBC**	☐ **SC**	☐ **ST**
☐ **GN-FF**	☐ **OBC-FF**	☐ **SC-FF**	☐ **ST-FF**
☐ **GN-PH**	☐ **OBC-PH**	☐ **SC-PH**	☐ **ST-PH**
☐ **GN-Ex ARMY**	☐ **OBC-Ex ARMY**	☐ **SC-Ex ARMY**	☐ **ST-Ex ARMY**

EducationalQualification:

S.No.	Exam Passed /परीक्षा	Board/University	Year	Roll No	Subjects	Total Marks	Obtain Marks	%	Div./ Grade
1	पूर्वमध्यमा/तत्समकक्षपरीक्षा 10th class								
2	उत्तरमध्यमा/तत्समकक्षपरीक्षा Higher Secondary								
3	शास्त्री/तत्समकक्षपरीक्षा Graduation								
4	आचार्य/तत्समकक्षपरीक्षा Post-Graduation								
5	अन्य परीक्षा Other								

पत्राचार का पूरा पता

अभ्यर्थी का अंगूठे का निशान (बाँया)

यहां अपनी फोटो चिपकाकर राजपत्रित अधिकारी से तिथि सहित प्रमाणित करायें।

फोटो पर अपना नाम लिखकर खिचवायें।

नाम.....

.....

.....

.....

जिला.....

मोबाइल न0.....पिन कोड.....

अभ्यर्थी के हस्ताक्षर

जिला :

अभ्यर्थी मोबाइल न0 0

परीक्षा संबंधी SMS इस मो.नं. पर भेजे जा सकते हैं।

अभिभावक मोबाइल न0 0

माता/पिता/अभिभावक का पूरा पता पत्राचार हेतु

ई.मेल.....

अभ्यर्थी की घोषणा

मैं.....पुत्र/पुत्रीश्री.....शपथ पूर्वक घोषणा करता/करती हूँ कि इस आवेदन–पत्र को मैंने स्वयं भरा है तथा आवश्यक प्रमाण–पत्र तथा अंक पत्रों की सत्य प्रतियां शुद्ध स्वयं संलग्न की है। मैंने योग कक्षा में प्रवेश हेतु नियमों को भली प्रकार पढ़ लिया है जिनका मैं पालन करूँगा/करूँगी। मेरे द्वारा दी गयी कोई भी सूचना गलत सिद्ध होने पर मेरा प्रवेश रद्द कर दिया जाय। प्रवेश निरस्त होने पर मैं किसी प्रकार की शुल्क वापसी का/की अधिकारी नहीं रहूँगा/रहूँगी। मै यह घोषणा करता/करती हूँ कि मैं अनुचित साधन के आरोप मे दण्डित नहीं हुआ/हुई हूँ और न ही मेरे आचरण के विरुद्ध जिलाधिकारी द्वारा लिखित सूचना दी गयी है, न ही मेरे विरुद्ध आपराधिक कानूनी कार्यवाही चल रही और न ही न्यायालय द्वारा मुझे किसी आपराधिक मामले मे दण्डित किया गया है और न ही शिक्षा संस्थान से निष्कासन हुआ है। मै यह घोषणा करता/करती हूँ कि मै विश्वविद्यालय द्वारा लिये गये किसी भी निर्णय के विरुद्ध न्यायालय में भी वाद नहीं करूँगा/करूँगी।

दिनांक .....

अभ्यर्थी के पूर्ण हस्ताक्षर.....

उत्तराखण्ड-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्
Uttarakhand Sanskrit University, Haridwar

योगाचार्य प्रवेश-आवेदन-पत्रम्/2022-2023

YOGACHARYA Admission Form for Session 2022-2023

कन्ट्रोल नम्बर

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)	रोल नम्बर	आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि

आवेदन पत्र भरने से पूर्व विवरण पुस्तिका के निर्देशों को पढकर पालन करें। आपके द्वारा दी गई सूचनाओं में परिवर्तन किया जाना सम्भव नहीं होगा। पत्राचार की सुविधा के लिए निर्दिष्ट स्थानों पर स्पष्ट पता लिखें। फार्म संख्या नोट कर लें एवं पत्र व्यवहार में अवश्य प्रेषित करें। फार्म के साथ नगद या बैंक ड्राफ्ट सामान्य एवं अ0पि0वर्ग हेतु 600/–(रूपये छः सौ) एवं अनु0जाति एवं अनु0जनजाति हेतु 300/– (रूपये तीन सौ) मात्र का **वित्त नियंत्रक उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार** के पक्ष में देय हो, का विवरण निर्धारित स्थान पर अंकित करें।

फार्म संख्या

नगद/ड्राफ्ट शुल्क सामान्य एवं अ0पि0वर्ग हेतु 600/– (रूपये छः सौ) एवं अनु0जाति एवं अनु0जनजाति हेतु300/– (रूपये तीन सौ) द्वारा भेजने का विवरण

ड्राफ्ट संख्या/कैश.....तिथि.....

बैंक का नाम.....शाखा/जिला.....

अभ्यर्थी के संबंध में व्यक्तिगत सूचनायें (हाईस्कूल प्रमाण पत्र के अनुसार, प्रमाण पत्र सहित दें।)

पूरा नाम (हिन्दी में) :.....

अंग्रेजी में(ब्लॉक में) :

पिता/पति का नाम (हिन्दी में).....

पिता का नाम
(अंग्रेजी में) :

आधार कार्ड संख्या **ई.मेल**.....

जन्म तिथि/आयु

दिनांक माह वर्ष

आरक्षण– CATEGORY TICK IN APPROPRIATE BOX-एकदम सही कैटेगरी के बाक्स में टिक करें।
FF-स्वतंत्रता सेनानी आश्रित, PH-विकलांग, सैन्य कर्मचारी के स्वयं-Ex ARMY-

सामान्य श्रेणीGN ☐	अ. पिछड़ा वर्ग OBC ☐	अनुसूचित जाति SC	अनुसूचित जनजाति ST ☐
☐ GN	☐ OBC	☐ SC	☐ ST
☐ GN-FF	☐ OBC-FF	☐ SC-FF	☐ ST-FF
☐ GN-PH	☐ OBC-PH	☐ SC-PH	☐ ST-PH
☐ GN-Ex ARMY	☐ OBC-Ex ARMY	☐ SC-Ex ARMY	☐ ST-Ex ARMY

EducationalQualification:

S.No.	Exam Passed /परीक्षा	Board/University	Year	Roll No	Subjects	Total Marks	Obtain Marks	%	Div./ Grade
1	पूर्वमध्यमा/तत्समकक्षपरीक्षा 10th class								
2	उत्तरमध्यमा/तत्समकक्षपरीक्षा Higher Secondary								
3	शास्त्री/तत्समकक्षपरीक्षा Graduation								
4	आचार्य/तत्समकक्षपरीक्षा Post-Graduation								
5	अन्य परीक्षा Other								

पत्राचार का पूरा पता

अभ्यर्थी का अंगूठे का निशान (बाँया)

यहां अपनी फोटो चिपकाकर राजपत्रित अधिकारी से तिथि सहित प्रमाणित करायें।

फोटो पर अपना नाम लिखकर खिचवायें।

नाम.....

.....

.....

.....

जिला.....

मोबाइल न0.....पिन कोड.....

अभ्यर्थी के हस्ताक्षर

जिला :

अभ्यर्थी मोबाइल न0 0

परीक्षा संबंधी SMS इस मो.नं. पर भेजे जा सकते हैं।

अभिभावक मोबाइल न0 0

माता/पिता/अभिभावक का पूरा पता पत्राचार हेतु

ई.मेल.....

अभ्यर्थी की घोषणा

मैं.....पुत्र/पुत्रीश्री.....शपथ पूर्वक घोषणा करता/करती हूँ कि इस आवेदन–पत्र को मैंने स्वयं भरा है तथा आवश्यक प्रमाण–पत्र तथा अंक पत्रों की सत्य प्रतियां शुद्ध स्वयं संलग्न की है। मैंने योग कक्षा में प्रवेश हेतु नियमों को भली प्रकार पढ़ लिया है जिनका मैं पालन करूँगा/करूँगी। मेरे द्वारा दी गयी कोई भी सूचना गलत सिद्ध होने पर मेरा प्रवेश रद्द कर दिया जाय। प्रवेश निरस्त होने पर मैं किसी प्रकार की शुल्क वापसी का/की अधिकारी नहीं रहूँगा/रहूँगी। मै यह घोषणा करता/करती हूँ कि मैं अनुचित साधन के आरोप मे दण्डित नहीं हुआ/हुई हूँ और न ही मेरे आचरण के विरुद्ध जिलाधिकारी द्वारा लिखित सूचना दी गयी है, न ही मेरे विरुद्ध आपराधिक कानूनी कार्यवाही चल रही और न ही न्यायालय द्वारा मुझे किसी आपराधिक मामले मे दण्डित किया गया है और न ही शिक्षा संस्थान से निष्कासन हुआ है। मै यह घोषणा करता/करती हूँ कि मै विश्वविद्यालय द्वारा लिये गये किसी भी निर्णय के विरुद्ध न्यायालय में भी वाद नहीं करूँगा/करूँगी।

दिनांक .....

अभ्यर्थी के पूर्ण हस्ताक्षर.....

उत्तराखण्ड-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्
Uttarakhand Sanskrit University, Haridwar

योग प्रमाणपत्र प्रवेश आवेदन पत्र 2022-23

कन्ट्रोल नम्बर

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)	रोल नम्बर	आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि

आवेदनपत्र के साथ नकद या बैंक ड्राफ्ट सामान्य एवं अ.पि.वर्ग हेतु 600रू. तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जाति हेतु 300 रू.मात्र वित्त नियन्त्रक उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार के पक्ष में देय होगा जिसका विवरण निर्धारित स्थान पर अंकित करें।

फार्म संख्या

नगद/ड्राफ्ट शुल्क सामान्य एवं अ0पि0वर्ग हेतु 600/- (रूपये छः सौ) एवं अनु0जाति एवं अनु0जनजाति हेतु300/- (रूपये तीन सौ) द्वारा भेजने का विवरण

ड्राफ्ट संख्या/कैश.....तिथि.....

बैंक का नाम.....शाखा/जिला.....

अभ्यर्थी के संबंध में व्यक्तिगत सूचनायें (हाईस्कूल प्रमाण पत्र के अनुसार, प्रमाण पत्र सहित दें।)

पूरा नाम (हिन्दी में) :.....

अंग्रेजी में(ब्लॉक में) :

पिता/पति का नाम (हिन्दी में).....

पिता का नाम (अंग्रेजी में) :

आधार कार्ड संख्या ई.मेल.....

जन्म तिथि/आयु दिनांक माह वर्ष

आरक्षण- CATEGORY TICK IN APPROPRIATE BOX-एकदम सही कैटेगरी के बाक्स में टिक करें।
FF-स्वतंत्रता सेनानी आश्रित, PH-विकलांग, सैन्य कर्मचारी के स्वयं-Ex ARMY-

सामान्य श्रेणीGN ☐	अ. पिछड़ा वर्ग OBC ☐	अनुसूचित जाति SC	अनुसूचित जनजाति ST ☐
☐ GN	☐ OBC	☐ SC	☐ ST
☐ GN-FF	☐ OBC-FF	☐ SC-FF	☐ ST-FF
☐ GN-PH	☐ OBC-PH	☐ SC-PH	☐ ST-PH
☐ GN-Ex ARMY	☐ OBC-Ex ARMY	☐ SC-Ex ARMY	☐ ST-Ex ARMY

EducationalQualification:

S.No.	Exam Passed /परीक्षा	Board/University	Year	Roll No	Subjects	Total Marks	Obtain Marks	%	Div./ Grade
1	पूर्वमध्यमा/तत्समकक्षपरीक्षा 10th class								
2	उत्तरमध्यमा/तत्समकक्षपरीक्षा Higher Secondary								
3	शास्त्री/तत्समकक्षपरीक्षा Graduation								
4	आचार्य/तत्समकक्षपरीक्षा Post-Graduation								
5	अन्य परीक्षा Other								

पत्राचार का पूरा पता

अभ्यर्थी का अंगूठे का निशान (बाँया)

यहां अपनी फोटो चिपकाकर राजपत्रित अधिकारी से तिथि सहित प्रमाणित करायें।

फोटो पर अपना नाम लिखकर खिचवायें।

नाम.....

.....

.....

.....

जिला.....

मोबाइल न0.....पिन कोड.....

अभ्यर्थी के हस्ताक्षर

जिला :

अभ्यर्थी मोबाइल न0 0

परीक्षा संबंधी SMS इस मो.नं. पर भेजे जा सकते हैं।

अभिभावक मोबाइल न0 0

माता/पिता/अभिभावक का पूरा पता पत्राचार हेतु

ई.मेल.....

अभ्यर्थी की घोषणा

मैं.....पुत्र/पुत्रीश्री.....शपथ पूर्वक घोषणा करता/करती हूँ कि इस आवेदन–पत्र को मैंने स्वयं भरा है तथा आवश्यक प्रमाण–पत्र तथा अंक पत्रों की सत्य प्रतियां शुद्ध स्वयं संलग्न की है। मैंने शास्त्री कक्षा में प्रवेश हेतु नियमों को भली प्रकार पढ़ लिया है जिनका मैं पालन करूँगा/करूँगी। मेरे द्वारा दी गयी कोई भी सूचना गलत सिद्ध होने पर मेरा प्रवेश रद्द कर दिया जाय। प्रवेश निरस्त होने पर मैं किसी प्रकार की शुल्क वापसी का/की अधिकारी नहीं रहूँगा/रहूँगी। मै यह घोषणा करता/करती हूँ कि मैं अनुचित साधन के आरोप मे दण्डित नहीं हुआ/हुई हूँ और न ही मेरे आचरण के विरुद्ध जिलाधिकारी द्वारा लिखित सूचना दी गयी है, न ही मेरे विरुद्ध आपराधिक कानूनी कार्यवाही चल रही और न ही न्यायालय द्वारा मुझे किसी आपराधिक मामले मे दण्डित किया गया है और न ही शिक्षा संस्थान से निष्कासन हुआ है। मै यह घोषणा करता/करती हूँ कि मै विश्वविद्यालय द्वारा लिये गये किसी भी निर्णय के विरुद्ध न्यायालय में भी वाद नहीं करूँगा/करूँगी।

दिनांक .....

अभ्यर्थी के पूर्ण हस्ताक्षर.....

4th International Conference
on
Developing Human Value
through

6th International Conferen
on
Phycho-Spi
Approac

Conference
Organizing Committee
Dr. Kamakhya Kumar
Organizing Chair
Dr. Kamakhya Kumar

TUSHANT ARYA